कक्षा - XI A

अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

अध्याय - 2 "भारतीय अर्थव्यवस्था (1950 - 90)

देश के आर्थिक विकास के लिए नीति निर्माण हेतु 15 मार्च 1950 को प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी की अध्यक्षता में योजना आयोग की स्थापना की गई। इस प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं के युग का सूत्रपात हुआ।

योजना आयोग ने सन् 1951 में भारत के लिए पांच वर्ष चलने वाली पहली पंचवर्षीय योजना का स्वरूप प्रस्तुत किया। जो 1 अप्रैल 1951 से 31 मार्च 1956 तक चली।

तब से वर्तमान तक 12 पंचवर्षीय योजनाएं पूर्ण हो चुकी है। 12 वी पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2017 तक चली। ये योजनाएं 5 वर्ष तक चलती है परन्तु इनमें आगामी 20 वर्षों में प्राप्त दीर्घकालीन उद्देश्यों का भी वर्णन होता है।

पंचवर्षीय योजनाओं के लक्ष्य

किसी भी पंचवर्षीय योजना के निम्नवत मुख्य लक्ष्य होते है।

(1) संवृद्धि — संवृद्धि से तात्पर्य देश में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन वृद्धि से है। परिवहन, बैंकिंग, रोजगार सेवाओं का विस्तार भी आवश्यक है। सकलघरेलु उत्पाद (G.D.P) का भी विकास होना चाहिए,

(2) आधुनिकीकरण :— अर्थव्यवस्था के विकास के लिए नवीन प्रौद्योगिकी को अपनाना ही आधुनिकीकरण कहलाता है।

केवल नवीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना भी आधुनिकीकरण है। जैसे - स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना, नारी की प्रतिभाओं को समान अवसर देना ....

(3) आत्मनिर्भरता — देश में उपलब्ध संसाधनों और तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देकर उत्पादन बढ़ाना ही आत्मनिर्भरता है। जिससे विदेशों पर आयात निर्भरता कम हो।

(4) समानता — संवृद्धि, आधुनिकीकरण आत्मनिर्भरता के साथ समानता भी आवश्यक है। प्रत्येक भारतीय को भोजन, अच्छा आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं जैसी मूलभूत आवश्यकताएं प्राप्त होना ही समानता कहलाता है। धन सम्पत्ति के वितरण की असमानताएं भी कम होनी चाहिए।

कृषि

स्वतंत्र भारत के नीति निर्माताओं ने भू-सुधार तथा चमत्कारी बीजों का प्रयोग कर भारतीय कृषि में क्रान्ति का संचार किया।

भू-सुधार — स्वतंत्रता प्राप्ति तक देश में जमींदार-जागीरदारी प्रथा थी। भूमिहीन श्रमिकों और किसानों को भू-दान आंदोलन (विनोबा भावे) द्वारा भूमि वितरण तथा स्वामित्व दिया गया।

अधिकतम भूमि की सीमा को हदबंदी द्वारा तय किया गया। साथ ही बिखरे जोतों के लिए चकबंदी शुरु की गयी। फिर भी जोतों में भारी असमानताएं बनी रही।

हरित क्रान्ति

स्वतंत्रता के समय 75% जनसंख्या कृषि पर आश्रित थी। खाद्यान्न उत्पादन न्यून था। पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जाता था। सिंचाई सुविधाओं का अभाव था। खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने के लिए कृषि क्षेत्र में 1960 के दशक में पहली और 1970 के दशक में दूसरी हरित क्रान्ति अपनायी गयी।

हरित क्रान्ति के जनक नॉरमान बोरलाग को माना जाता है। भारत में हरित क्रान्ति के लिए डा० एम० एस० स्वामीनाथन का योगदान उल्लेखनीय है। हरित क्रान्ति में किये गये प्रयास निम्नवत है, —

(i) उच्च गुणवत्ता युक्त बीजों का प्रयोग (HYV)
(ii) रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग,
(iii) रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग,
(iv) सिंचाई सुविधाओं का विस्तार,
(v) उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग, आदि ..

विपणित अधिशेष — किसानों द्वारा उत्पादित खाद्यान्न का वह भाग जो अपने लिए रखने के बाद, बाजार में बेच दिया जाता है, विपणित अधिशेष कहलाता है।

उद्योग और व्यापार

अर्थशास्त्रियों का कथन है कि कोई भी देश तभी उन्नति कर सकता है, जब द्वितीयक क्षेत्र / औद्योगिक क्षेत्र उन्नति करे। औद्योगिक क्षेत्र ही स्थायी और अधिक

मात्रा में रोजगार उत्पन्न करते है।

औद्योगिक नीति प्रस्ताव - द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) में योजना आयोग ने बड़े तथा भारी उद्योगों की स्थापना पर बल दिया, जिसे औद्योगिक नीति प्रस्ताव कहा जाता है। जिसमें उद्योगों को 3 वर्ग में बाँटा गया,

(I) राज्य द्वारा स्थापित भारी उद्योग,
(II) निजी उद्योग,
(III) ऐसे उद्योग जिनकी स्थापना राज्य और निजी क्षेत्र दोनों कर सकते हैं,

लघु उद्योग

1955 की कर्वे समिति के अनुसार लघु उद्योग और कुटीर उद्योगों को अधिक बढ़ावा देना चाहिए क्योंकि ये कम पूंजी में अधिक रोजगार उपलब्ध कराते है।

सन् 1950 में 5 लाख पूंजी वाले उद्योगों को परन्तु वर्तमान में 5 करोड़ से 10 करोड़ की पूंजी वाले उद्योगों को लघु उद्योग श्रेणी में रखा जाता है।

व्यापार नीति : आयात प्रतिस्थापन

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के आयातों में तेजी से वृद्धि हुयी किन्तु निर्यातों में अपेक्षित वृद्धि नहीं हुयी। जिससे व्यापार घाटा बढ़ता रहा। इसके लिए व्यापार नीति में आयातों को हतोत्साहित करने के लिए आयात प्रतिस्थापन नीति को अपनाया गया।

"आयात प्रतिस्थापन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं के स्थान पर

उनका निकट स्थानापन्न देश में उत्पादित किया जाता है"।

नीति आयोग — 1 जनवरी 2015 से योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किया गया है। नीति अर्थात राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान।

HYV (उच्च गुणवत्ता युक्त बीज) — High Yielding Variety

अर्थात वे बीज जिनके उपयोग से उत्पादन में अत्याधिक वृद्धि होती है। इन्हें चमत्कारी बीज भी कहा जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न -

(i) विक्रय अधिशेष क्या है?
(ii) चमत्कारी बीज किसे कहते है?
(iii) भू-सुधार से क्या आशय है?
(iv) भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व बताइए।
(v) भारत में कितनी पंचवर्षीय योजनाएं पूर्ण हो चुकी है?
(vi) हरित क्रान्ति क्या है?

श्रीमती कमलेश बिष्ट,
प्रवक्ता - अर्थशास्त्र
बी.एल.एस.रा.बा.इ.का.
रैंचोली, पिथौरागढ़